e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2320-6710

IJIRSET

International Journal of Innovative Research in SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 10, Issue 6, June 2021

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.512

9940 572 462 | 6381 907 438 | ijirset@gmail.com | www.ijirset.com

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 10, Issue 6, June 2021 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1006441|

पर्यटन विकास पर आर्थिक प्रभावों का अध्ययन

(चित्तौड़गढ़ जिले के संदर्भ में)

Dr. Pankaj Rawal

Associate Professor, Geography

JRN Rajasthan Vidyapeeth (Deemed to be University) Udaipur

पर्यटन व्यवसाय जहाँ आर्थिक रूप से अर्थव्यवस्था में अपना योगदान देता है ठीक उसी प्रकार सामाजिक व्यवस्था को भी प्रभावित करता है। पर्यटन व्यवसाय का प्रभाव सामाजिक एवं सामाजिक प्रभावों का आंकलन पर्यटकों एवं राज्य के पर्यटन केन्द्रों के जिलों की जनता पर किये जाने वाली सामाजिक स्थितियों के परिवर्तन की दिशा का बोध होता है।

किसी भी जिले की समृद्ध प्राकृतिक, ऐतिहासिक, वास्तुकला एवं सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित करने हेतु जिले के समृद्ध हस्तकलाओं एवं कुटीर उद्योगों की वस्तुओं की बिक्री के लिए समुचित बाजार का विकास करना, तीर्थ पर्यटन एवं मेले, त्यौहारों द्वारा अन्तर सांस्कृतिक भाई-चारे को बढ़ावा देना तथा पर्यटन व्यवसाय द्वारा राज्य के सामाजिक उत्थान में सहयोग प्रदान करना आवश्यक है।

चूंकि पर्यटक जहां पर्यटन करने आता है दोनों ही एक दूसरे से सीखते हैं सम्पर्क में आते हैं एवं बदलाव को अपने में अंगीकार करने की कोशिश करते हैं।

राज्य में प्रतिवर्ष कई स्वदेशी व विदेशी पर्यटक मेलों, उत्सवों या अन्य अवसरों पर आते हैं, ये पर्यटक पर्यटन केन्द्र के जिले की जनता के सामाजिक जीवन को कई रूपों में प्रभावित करते हैं। एक और देश के विभिन्न भागों से आने वाले पर्यटकों में अपनी भिन्न-भिन्न संस्कृति, भाषा, रहन-सहन, खान-पान, आदि सामाजिक लक्षण छलकते हैं वहीं दूसरी

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|
|| Volume 10, Issue 6, June 2021 ||
| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1006441|

और विभिन्न देशों से आने वाले पर्यटकों में अपनी संस्कृति, आचार-विचार, भाषा, फैशन आदि सामाजिक लक्षण विद्यमान होते हैं। इन भिन्न-भिन्न सांस्कृतिक विशेषताओं को देखने, समझने का अवसर पर्यटन केन्द्र के लोगों, स्वदेशी, विदेशी पर्यटकों आदि को मिलता है। इन भिन्न-भिन्न संस्कृतियों के लक्षणों का प्रभाव देशी व विदेशी पर्यटकों पर ही नहीं अपितु पर्यटन केन्द्र के लोगों को लगातार अपने प्रभाव क्षेत्र में रखता अत: निरन्तर विभिन्न सांस्कृतिक लक्षणों को देखने व समझने की प्रक्रिया से पर्यटन केन्द्र के लोगों पर महत्वपूर्ण सामाजिक प्रभाव सामाजिक जीवन के विभिन्न रूपों को छू जाता है।

इन सामाजिक प्रभावों से एक और राज्य में सामाजिक स्थिति में प्रगति की और परिवर्तन होते हैं तो दूसरी और हमारी संस्कृति हानिकारक प्रभावों की चपेट में आ जाती है।

चित्तौड़गढ़ जिले में पर्यटन के आर्थिक प्रभावों का अध्ययन :

संसार में आज पर्यटन सबसे तीव्र रूप में विकसित होने वाला उद्योग है। देश के आर्थिक विकास में पर्यटन की भूमिका को अब स्वीकार किया जाने लगा है देश के लिए पर्याप्त विदेशी मुद्रा उपलब्ध कराने में पर्यटन की अपनी भूमिका है जिसमें राजस्थान के पर्यटन क्षेत्र का बहुत बड़ा योगदान है। पर्यटन व्यवसाय का औद्योगिकरण की और अग्रसर होना इस बात का संकेत है कि पर्यटन व्यवसाय से होने वाली आय एवं आर्थिक क्रियाएं निश्चित रूप से किसी राज्य, जिले की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करती है।

एक अनुमान का अनुसार प्रत्येक आठ विदेशी पर्यटकों पर एक प्यक्ति को रोजगार मिलता है। तथा प्रत्येक 32 स्वदेशी पर्यटकों पर एक व्यक्ति के लिए रोजगार का अवसर खुलता है।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 10, Issue 6, June 2021 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1006441|

तालिका संख्या 01 : चित्तौड़गढ़ जिले में पर्यटन से आय में वृद्धि के आधार पर

क्र.सं.	आय वृद्धि	शिक्षाविद्	व्यवसायी	स्थानीय नागरिक	गाईड	योग
1.	हुई	41 (82.00)	46 (92.00)	42 (84.00)	48 (96.00)	177 (88.5)
2.	नहीं हुई	09 (18.00)	04 (8.00)	08 (16.00)	02 (4.00)	23 (11.5)
	कुल	**50 (100)**	**50 (100)**	**50 (100)**	**50 (100)**	**200 (100)**

आरेख संख्या 01 : चित्तौड़गढ़ जिले में पर्यटन से आय में वृद्धि के आधार पर

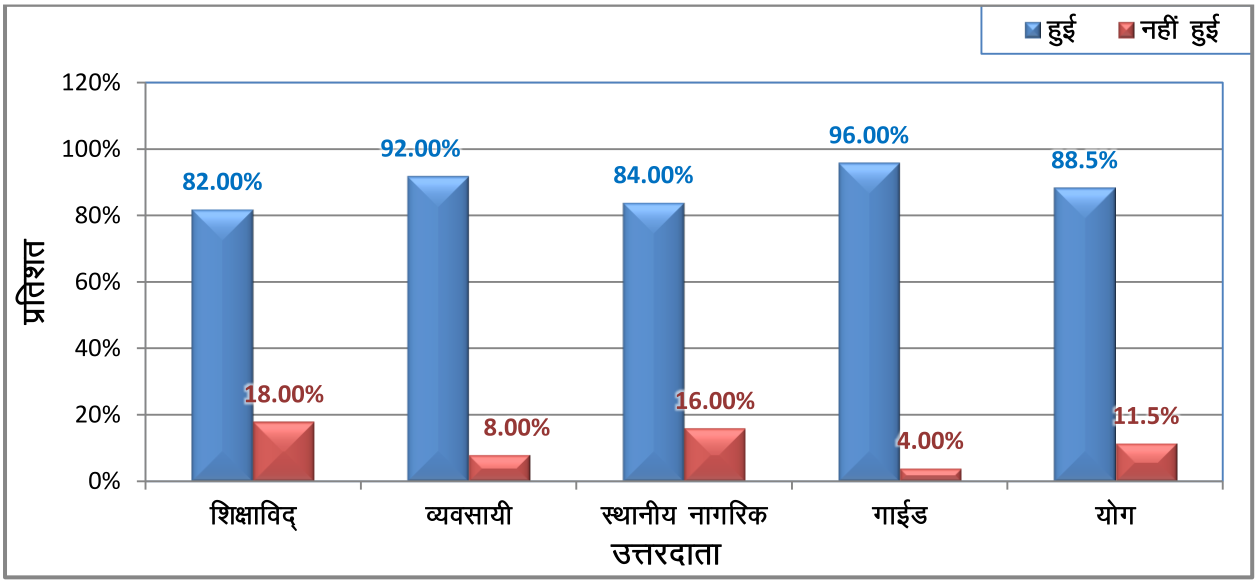

उपरोक्त सारणी में 200 उत्तरदाताओं से प्राप्त जानकारी के अनुसार सर्वाधिक 82.00 प्रतिशत शिक्षाविद् 92 प्रतिशत व्यवसायी, 82 प्रतिशत स्थानीय नागरिकों तथा 96.00 प्रतिशत गाइडों ने बताया कि पर्यटन से उनकी आय में वृद्धि हुई है, जबकि 11.5 प्रतिशत कुल उत्तरदाताओं के अनुसार पर्यटन से उनकी आय में वृद्धि नहीं हुई है।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 10, Issue 6, June 2021 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1006441|

तालिका संख्या 02 : पर्यटन से आर्थिक विकास में प्रभाव के आधार पर

क्र. सं.	आर्थिक प्रभाव	शिक्षाविद्	व्यवसायी	स्थानीय नागरिक	गाईड	कुल
1.	होटलों की संख्या व आय में वृद्धि	42 (84.00)	45 (90.00)	40 (80.00)	35 (70.00)	162 (81.00)
2.	परिवहन व्यवस्था का विकास	30 (60.00)	36 (72.00)	38 (76.00)	40 (80.00)	144 (72.00)
3.	पर्यटन से जुड़े लोगों की आय में वृद्धि	34 (68.00)	46 (92.00)	41 (82.00)	45 (90.00)	166 (83.00)
4.	निर्माण कार्यों में अभिवृद्धि	40 (80.00)	35 (70.00)	40 (80.00)	46 (92.00)	161 (80.00)
5.	लोकलाकारों की आर्थिक स्थिति में सुधार	34 (68.00)	36 (72.00)	42 (84.00)	38 (76.00)	150 (75.00)
	आधार	**50 (100)**	**50 (100)**	**50 (100)**	**50 (100)**	**200 (100)**

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 10, Issue 6, June 2021 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1006441|

आरेख संख्या 02 : पर्यटन से आर्थिक विकास में प्रभाव के आधार पर

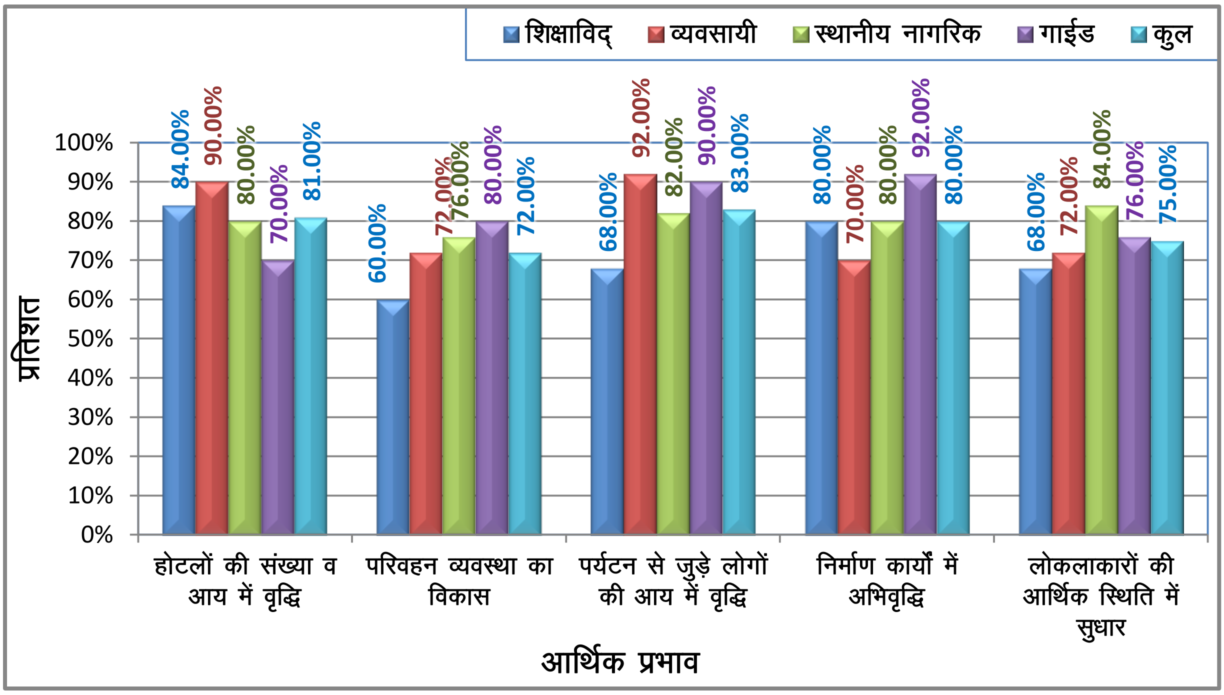

उपरोक्त सारणी के अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन से आर्थिक विकास पर पड़ने वाले प्रभावों की स्थिति प्रदर्शित करती है, जैसा कि सर्वविदित है कि भारत में आने वाला हर तीसरा विदेशी पर्यटक राजस्थान अवश्य आता है। राज्य में आने वाले विदेशी पर्यटकों की संख्या में धीरे-धीरे वृद्धि हो रही है अत: धीरे-धीरे विदेशी मुद्रा का अर्जन भी बढ़ रहा है। वर्ष 2005 में विदेशी पर्यटकों की संख्या 11.31 लाख व 2006 में 12.20 लाख रही जबकि यह 2007 में बढ़कर 14.01 लाख हो गयी कुल पर्यटकों की संख्या का 5.13 प्रतिशत है। जो कि आर्थिक विकास में मददगार साबित हो रही है, अत: अध्ययन क्षेत्र से प्राप्त जानकारी के अनुसार कुल 81.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार पर्यटन के प्रभाव से होटलों की संख्या में वृद्धि हुई है, जिसका प्रमुख कारण क्षेत्र में बढ़ती पर्यटकों की संख्या निजी उद्यमियों को प्रोत्साहित करती है जिससे वे इस और अपना ध्यान देकर पर्यटन उद्योग को विकसित कर रहे हैं। इस विकास कार्य में सर्वप्रथम कार्य पर्यटकों के निवास स्थानों में वृद्धि करने हेतु होटलों के निर्माण कार्य में वृद्धि हुई करना है। साथ ही होटलों के निर्माण के साथ-साथ चित्तौड़गढ़ पेईंग गेस्ट व्यवस्था का भी विकासकरना है, जिससे वर्तमान में बढ़ती पर्यटकों की संख्या व

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|
|| Volume 10, Issue 6, June 2021 ||
| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1006441|

पर्यटन व्यवसाय को देखकर क्षेत्र के लोगों ने छोटे स्तर पर घर में ही पर्यटकों को ठहराने की समुचित व्यवस्था प्रारम्भ कर दी है। पेईंग गेस्ट व्यवस्था लगातार फल-फूल रही है। इनके विकास के साथ-साथ होटलों की आय में भी वृद्धि हुई है क्योंकि अध्ययन क्षेत्र में निरन्तर देशी, विदेशी पर्यटकों की संख्या बढ़ रही है जिससे स्वत: ही यहां की होटलों की आय में वृद्धि हो रही है। देशी व विदेशी पर्यटक प्राप्त होने वाली भोजन आवास सम्बन्धी सुविधाओं के बदले यहां के होटल व्यवसाइयों को विदेशी मुद्रा देकर जाते हैं जिससे उनकी आय में वृद्धि होती हैं।

उत्तरदाताओं के रूप में 68 प्रतिशत शिक्षाविद, 92.00 प्रतिशत व्यवसायी वर्ग, 82.00 प्रतिशत स्थानीय नागरिक, 90.00 प्रतिशत गाइडों ने बताया कि क्षेत्र में पर्यटन से जुड़े लोगों की आय में वृद्धि हुई है, जिसमें सर्वाधिक रूप से गाईडों की आय में वृद्धिहुई है, क्योंकि पर्यटकों की संख्या में वृद्धि से केवल होटल व्यवसायियों की ही आय नहीं बढ़ती अपितु गाइड जो कि पर्यटकों को सभी दर्शनीय स्थलों से उनकी संस्कृति से अवगत कराते हैं, उनकी आय में भी वृद्धि होती है, ये गाइड पर्यटकों को पर्यटन स्थलों पर भ्रमण कराकर तथा वहां की पूर्ण जानकारी देकर अपनी आय प्राप्त करते है।

इसी प्रकार 60.00 प्रतिशत शिक्षाविद, 72.00 प्रतिशत व्यवसायी वर्ग, 76.00 प्रतिशत स्थानीय नागरिकों, 80.00 प्रतिशत गाइडों का मानना है कि पर्यटन के क्षेत्र में परिवहन व्यवस्था में सुधार व विकास हुआ है, जिससे पर्यटकों को कोई असुविधा न हो। क्योंकि अध्ययन क्षेत्र में न पर्यटकों को परिवहन सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए सार्वजनिक व निजी क्षेत्रों को कार्य करना पड़ता है। बढ़ती पर्यटकों की संख्या के साथ परिवहन व्यवस्था का भी विकास होता है। क्षेत्र में इसी कारण पर्यटन क्षेत्रों में विशेष निजी क्षेत्रों में परिवहन व्यवस्था तेजी से पनप रही है। इसी के साथ यहां के ऑटो चालकों की आय में भी वृद्धि हुई है। ये क्षेत्र में आने वाले पर्यटकों को हवाई अड्डे बस-स्टेण्ड, रेलवे स्टेशन आदि स्थानों से पर्यटन स्थलों तक ले जाने का कार्य ऑटो चालक करते हैं। ये देशी व विदेशी पर्यटकों को शहर में भ्रमण भी कराते हैं। इस प्रकार ऑटो चालकों को इन सेवाओं के बदले आय प्राप्त होती है। जिससे उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत होती है। निर्माण कार्यों द्वारा सम्पत्ति में

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)
| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|
|| Volume 10, Issue 6, June 2021 ||
| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1006441|

अभिवृद्धिके आधार पर कुल 80 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि अध्ययन क्षेत्र के विभिन्न पर्यटन स्थलों के विकास के लिए विभिन्न प्रकार की सुविधाओं का विस्तार किया गया है। इस हेतु आवास सुविधाएं जुटाई गई है और परिवहन के साधनों के मुख्य रूप विकास के लिए सड़कों, रेलमागोर् आदि का विकास किया गया है। इस प्रकार के निर्माण कार्यों द्वारा राज्य की सम्पति में भी वृद्धि हुई। ये निर्माण कार्य आस-पास के क्षेत्रों के विकास को भी गति प्रदान कर रहे हैं।

इसी प्रकार 68.00 प्रतिशत शिक्षाविद् 72.00 प्रतिशत व्यवसायी, 84.00 प्रतिशत स्थानीय निवासी, 76.00 प्रतिशत गाइडों के अनुसार पर्यटन से लोक कलाकारों की आर्थिक स्थिति में सुधारहुआ है जो कि कुल 75.00 प्रतिशत है। उत्तरदाताओं ने बताया कि अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन विकास से सांस्कृतिक केन्द्रों की स्थापना की गई है जिससे लोक कलाकारों को अपनी कला के प्रदर्शन के लिए एक व्यवस्थित मंच प्राप्त हुआ है। सांस्कृतिक केन्द्रों द्वारा इन्हें दर्शक प्राप्त हो जाते हैं। और फिर कलाकार उन्हें बांधने के कार्य में काफी हद तक सफल होते हैं। इन केन्द्रों द्वारा लोक कलाकारों की आर्थिक स्थिति में काफी सुधार हुआ है। कई कलाकारों को इन केन्द्रों के कारण रोजगार प्राप्त है जिससे उनके रहन-सहन व आर्थिक स्थिति में काफी सहायता मिली है अत: पर्यटन विकास में सांस्कृतिक केन्द्रों की स्थापना करने से एक और इन कलाकारों को रोजी रोटी कमाने का अवसर प्राप्त हुआ है तथा दूसरी ओर अपनी कला को कई लोगों के सामने प्रस्तुत करने का स्वर्ण अवसर प्राप्त हुआ है।

अर्थव्यवस्था में पर्यटन की भूमिका :

पर्यटन का विकास यद्यपि व्यापक स्तर का है किन्तु कार्य को तीव्र गति प्रदान करने के लिए उसका क्षेत्रीय विभाजन कर पर्यटन के विकास का दायित्व राज्य सरकारों ने पर्यटन विभाग को दिया है। जिससे पर्यटन से जुड़े अलग-अलग आयामों की स्थितियों व क्षेत्रों को, राज्य स्तर पर परिस्थितियों के अनुसार सोच विकसित करके एक बड़े मंच पर पर्यटन से प्राप्त उपलब्धियों का आंकड़ा बढ़ाया जा सके। पर्यटन के इस रूप द्वारा न केवल विदेशी

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 10, Issue 6, June 2021 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1006441|

मुद्रार्जन द्वारा राजस्व को बढ़ाया जा सकता है अपितु इसके द्वारा हजारों लोगों को रोजगार भी प्रदान होता है और ग्रामीण व्यवसाय को महत्वपूर्ण स्थान भी मिलता है।

चूंकि भौतिकवादी व पश्चिमीकरण की दौड़ में पर्यटन विश्व व्यापार का अंग बन सकता है अतः इसे ध्यान में रखकर इसकी भूमिका का आंकलन आर्थिक व सामाजिक लाभ की दृष्टि से शहरी व ग्रामीण अर्थव्यवस्था दोनों पर देखा जा सकता है जिसे निम्न रेखाचित्र में दिखाया गया है।

आरेख संख्या 03 : पर्यटन की अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

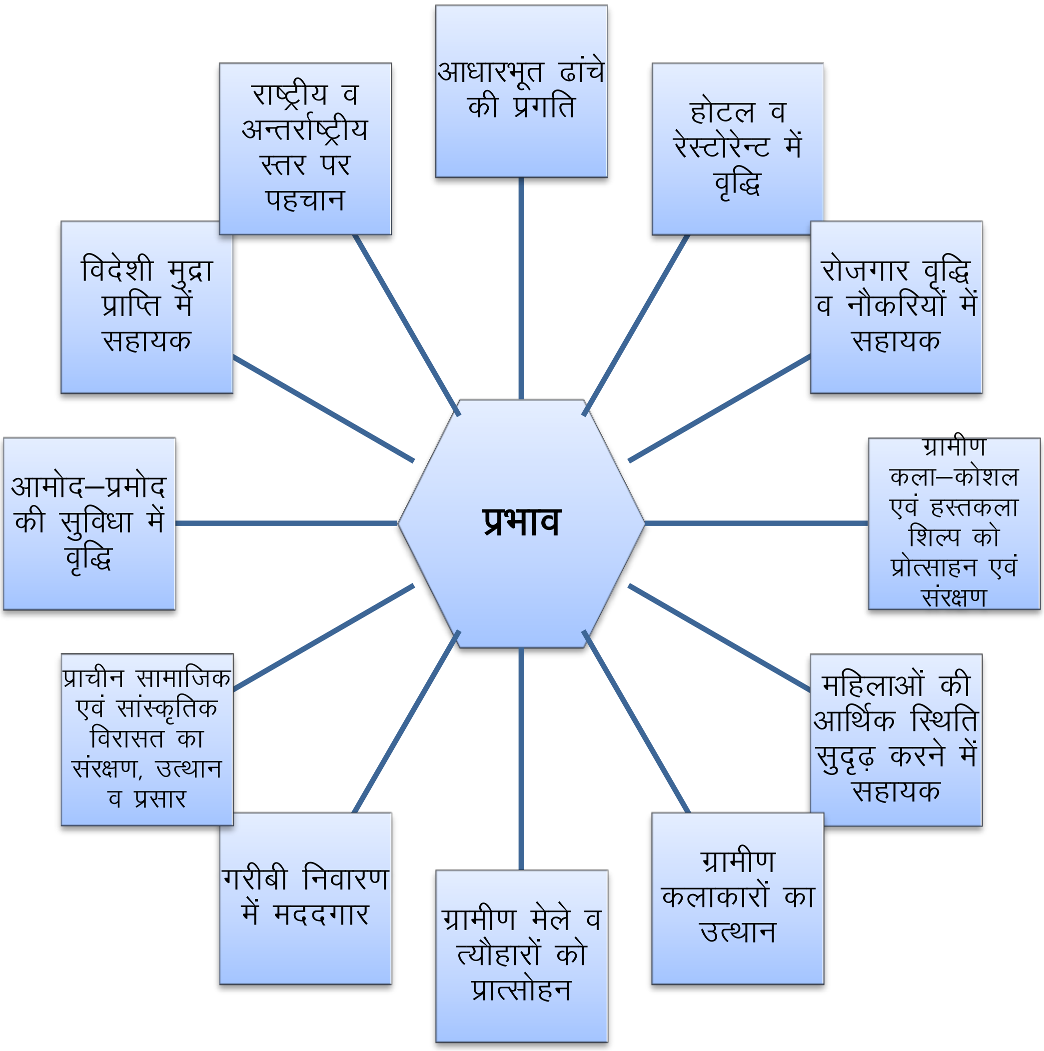

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|
|| Volume 10, Issue 6, June 2021 ||
| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1006441|

पर्यटन के आर्थिक लाभ :

पर्यटन एक बहुक्षेत्रीय क्रिया होने से इसका संबंध कई आर्थिक घटकों से रहा है। इससे एक ओर अर्थव्यवस्था में आर्थिक गतिविधियों द्वारा सकारात्मक प्रभाव पड़े है तो वहीं देशी-विदेशी पर्यटकों द्वारा किये जाने वाला खर्च संपूर्ण अर्थव्यवस्था के लिए आय का स्त्रोत भी बना है। राज्य के पर्यटन का भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान होने से इसके बहुआयामी प्रमुख आर्थिक प्रभाव को नीचे बताया गया है।

चित्तौड़गढ़ के प्रसिद्ध कालिका माता मंदिर व प्रतिवर्ष नवरात्र में लगने वाले मेले ने कई विदेशी व घरेलू पर्यटकों के आगमन को इस प्रसिद्ध धार्मिक स्थल में निरन्तर बढ़ाया है तो वहीं चित्तौड़गढ़ के अन्य प्रमुख तीर्थस्थल मातृकुण्डिया ने पुरातन से वर्तमान समय तक विशेषत: गुजराती पर्यटकों की संख्या में वृद्धि की है। पर्यटकों की निरन्तर वृद्धि का प्रभाव यहां के होटल व धर्मशाला की संख्या वृद्धि पर प्रत्यक्ष पड़ा है।

मूलत: कहा जा सकता है कि राज्य सरकार ने विविध पर्यटन स्थलों की आवासीय सुविधा पर वर्तमान में विशेष ध्यान दिया गया है जिससे पर्यटकों को उनके स्तरानुकूल आवास व खान-पान की सुविधा, सभी पर्यटन स्थलों पर उपलब्ध हुई है।

पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों की बढ़ती सुविधाओं से घरेलू व विदेशी पर्यटकों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हुई है जिससे इन क्षेत्रों में बाजारीकरण व व्यवसायिकरण की गतिविधियों को अप्रत्यक्ष रूप से प्रोत्साहन मिला है और यह हस्तकला, कुटीर उद्योगों पर मुख्य रूप से दृष्टिगोचर हुआ है। राजस्थान जैसे राज्य के लिए यह ओर भी अधिक लाभदायक रहा है इसका कारण राज्य के प्रत्येक धार्मिक स्थलों का विविध हस्तकलाओं में धनी रहना रहा है। राज्य के पर्यटन स्थलों में हस्तकला व कुटीर उद्योग का कई प्रकार से महत्व है इससे एक ओर जहां कम पूंजी से अधिक रोजगार, विकेन्द्रीकरण निर्यातों में वृद्धि तथा अधिक आय का स्त्रोत प्राप्त हुआ है वहीं दूसरी ओर कलात्मक एवं श्रेष्ठ उत्पादन का लाभ भी मिला है। ये उद्योग आय के समान वितरण तथा अर्थव्यवस्था के संतुलित विकास का मार्ग प्रशस्त करने में बड़े उद्योग के पूरक एवं सहायक उद्योग बने है और राज्य के स्थानीय स्त्रोतों के कच्चे

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 10, Issue 6, June 2021 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1006441|

माल का उपयोग कर क्षेत्रीय विकास का मार्ग प्रशस्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है फलस्वरूप इन उद्योगों का वर्तमान में विशेषत: पर्यटन क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था में योगदान निश्चित ही प्रेरणादायक है।

सारांश :

निष्कर्षत: कहा जा सकता है पर्यटन एक उद्योग के रूप में विकसित हो रहा है, क्योंकि राजस्थान सरकार ने पर्यटन को व्यापक रूप से प्रोत्साहन देने के लिए मार्च 1989 में पर्यटन को उद्योग घोषित किया। सरकार के इस निर्णय से पर्यटन के क्षेत्र में संलग्न सभी इकाईयों व व्यक्तियों को लाभ पहुंचा है। एक उद्योग के रूप में व्यापक सुविधाएं जुटाना सम्भव हो पाया है। पर्यटन व्यवसाय को उद्योग के रूप में स्वीकार करना ही इस बात का संकेत है कि यह राज्य की अर्थव्यवस्था बहुत अधिक प्रभावित करने लगा है।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि जिले के आर्थिक विकास में 90 के दशक से पर्यटन व्यवसाय की आय का योगदान महत्वपूर्ण है। पर्यटन व्यवसाय ने क्षेत्र की सम्पूर्ण आर्थिक प्रक्रिया को प्रभावित किया है। पर्यटन व्यवसाय मुख्यत: पर्यटकों से सम्बन्धित है। पर्यटकों को पर्यटन हेतु आने पर ठहरने की व्यवस्था करनी होती है। चूँकि अधिकांश पर्यटक होटलों में ठहरते हैं। इसीलिए पर्यटन व्यवसाय की आय होटल व्यवसाय के इर्द-गिर्द घूमती हैं। होटल व्यवसाय से ही भोजन व्यवस्था, आवागमन साधनों की व्यवस्था, संचार साधनों की व्यवस्था, हेण्डीक्रापट, खिलोना व्यवसाय, मनोरंजन के साधनों की व्यवस्था फोटोग्राफी व्यवस्था आदि व्यवसाय सीधे जुड़े हैं। इन सभी पर पर्यटन विकास का आर्थिक प्रभाव देखा गया है।

चित्तौड़गढ़ में पर्यटन क्षेत्र की आर्थिक संवृद्धि और रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, यही नहीं सामाजिक असमानताओं को दूर करने की दृष्टि से भी पर्यटन पर सकारात्मक प्रभाव डालता है, पर्यटन पर्यावरण की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन देता है, साथ ही साथ अर्थव्यवस्था के विकास को भी अभिप्रेरित करता है, इसीलिए पर्यटन के सामाजिक आर्थिक प्रभाव वहां के निवासियों पर सकारात्मक प्रभाव माना जाता है।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 10, Issue 6, June 2021 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1006441|

संदर्भ :

- आनन्द, एम.एम. (1986) : टुअरिज्म एण्ड होटल इण्डस्ट्री इन इण्डिया : ए स्टडी ऑफ मैनेजमेन्ट, प्रेन्टिस, हॉल ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली।
- उषा सरूपरिया, 1972-73 : माही बांध परियोजना बांसवाड़ा के श्रमिकों का रहन-सहन एवं उनकी जीवन दशाओं का विश्लेषण।
- एण्डसन, सन (1961) : वर्क एण्ड लेबर, इन्टरनेशनल लाईब्रेरी ऑफ सोशियोलॉजी, लंदन।
- गुप्ता, मोहनलाल - राजस्थान का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, पृ.सं.48-49
- गुप्ता, मोहनलाल - राजस्थान का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, पृ.सं.182
- चौपड़ा, सुहिता (1992) : टूरिज्म डवलपमेन्ट इन इण्डिया, नई दिल्ली।
- जिला सांख्यिकी रूपरेखा, जिला चित्तौड़गढ़ 1981 1991, 2001 एवं 2011
- निर्विरोध, तारादत्त (1989) : उजले अतीत का विकसित राजस्थान, यूनिवर्सिटी बुक हाउस, जयपुर।
- प्रसाद, गायत्री, (2005) - सांस्कृतिक भूगोल, शारदा पुस्तक भण्डार, इलाहाबाद मामोरिया, चतुर्भुज, शर्मा, बी. एल. (2006) आर्थिक भूगोल, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा
- बत्रा, के.एल. (1990) : प्रोबलम्ब एण्ड प्रोस्पैक्ट ऑफ टूरिस्म, प्रिन्टवैल पब्लिकेशन, जयपुर।
- भाटिया, ए.के. (1991) : पुस्तक इन्टरनेशनल टूरिज्म फण्डामेन्टल एण्डप्रेक्टिसेज।
- व्यास एन. एन 1986 माही बजाज सागर एवं कडाणा बांध से विस्थापित आदिवासियों का विश्लेषण, मा. ला. व. आदिम जाति शोध संस्थान, उदयपुर, राजस्थान।
- H. Kalro and V. N. Asopa, Issuesin development and management of ground water Resoueces in East Utaar Pradesh Shashi Kalvalli, IIM, Ahmdabad, July, 1989 p. 23.
- Ahmad, A. (ed.), year 1999, social structure and regional development, Rawat Pub. Jaipur

शोध कार्य हेतु निम्नलिखित पुस्तकालय, संस्थान, पत्र-पत्रिकाएँ व जर्नल्स की सहायता ली

1. केन्द्रीय पुस्तकालय, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर।
2. बुकलेट्स ऑन ट्यूरिज्म।
3. केन्द्रीय पुस्तकालय, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ, विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 10, Issue 6, June 2021 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1006441|

4. राजस्थान पर्यटन विकास निगम लिमिटेड, जयपुर।

5. प्रगति प्रवतिवेदन (2016-17) पर्यटन विभाग, राजस्थान सरकार।

6. पर्यटक स्वागत केन्द्र, चित्तौड़गढ़।

7. यात्री भारतीय पर्यटन विकास निगम (आई.टी.डी.सी.) की पत्रिका, नई दिल्ली।

8. अतिथि, टूरिज्म आर्ट एण्ड कल्चर डिपार्टमेंट मैंगजीन, राजस्थान, उदयपुर।

9. सुजस, जनसम्पर्क विभाग की पत्रिका, राजस्थान सरकार, जयपुर।

***

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor

Impact Factor:
7.512

INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

निस्केयर
NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

www.ijirset.com

Scan to save the contact details